अध्याय - १

कवि शिवमंगल सिंह "सुमन" - एक परिचय

पृष्ठ १ से १२

अध्याय - १

कवि शिवमंगल सिंह "सुमन"

एक परिचय

डॉ. शिवमंगल सिंह "सुमन" हिन्दी के आधुनिक कवि हैं । "डॉ. शिवमंगल सिंह "सुमन" हिन्दी के उन कवियों में से हैं जिन्होंने मार्क्सवादी आधार लेकर काव्य रचना तो की है उसे अत्यंत अधिक लोकप्रिय भी बनाया है ।"[1] कवि "सुमन"जी ने साहित्य की सेवा युवावस्था में शुरू की थी । "यौवन की देहरी पर पैर रखते ही अन्तर्मन का रागमय उच्छ्वास तो बहुतों के अधरोंपर कविता बनकर फूटता है, किन्तु उनकी संख्या कम होती है जो उस प्रथमोन्मेष को ही अन्तिम नहीं बन जाने देते, जिनकी कविता निरन्तर विकास पथ पर अग्रेसर होती रहती है ।"[2] कवि शिवमंगल सिंह "सुमन" भी इन्हीं में से एक हैं । हम उनकी जीवनी संक्षेप में देख रहे हैं ।

जन्म

डॉ. शिवमंगल सिंह "सुमन" जी का जन्म "१६ अगस्त १९१६"[3] को "नाग पंचमी"[4] शुभ अवसर पर अगरपुर गाव जिला उन्नाव में हुआ । जो उत्तर प्रदेश के क्षेत्र में आता है ।

माता-पिता

डॉ. शिवमंगल सिंह "सुमन" जी उच्च कुलोत्पन्न थे । ""सुमन" जी परिहार क्षत्रिय वंश में जन्मे, महरवाड़ वंशीय माता के दूध से उनका विवर्द्धन

---

१. डॉ. संपत ठाकुर, "हिन्दी की मार्क्सवादी कविता", पृष्ठ ४२८

२. आनंद प्रकाश दीक्षित, "आजके लोकप्रिय हिन्दी कवि शिवमंगल सिंह "सुमन", पृष्ठ ३

३. डॉ. भगवतशरण उपाध्याय, "कविश्री शिवमंगल सिंह "सुमन", पृष्ठ ३.

४. आ. प्र. दिक्षित, शिवमंगलसिंह "सुमन", "आजके लोकप्रिय हिन्दी कवि" परिशिष्ठ से पृष्ठ १५७

हुआ रीवाँ राज्य की सेना के जनरल उनके पिता ठाकुर साहब बख्श सिंह के पौरुष ने उन्हें दृढ़ता और तेजस्विता प्रदान की।"[५] "सुमन" के पितामह ठाकुर बलराजसिंह स्वयं रीवाँ सेना में कर्नल थे । "प्रपितामह ठाकुर चन्द्रिकासिंह को सन १८५७ की क्रान्ति में सक्रिय भाग लेने और वीरगति प्राप्त करने का गौरव प्राप्त था ।"[६] उनकी बहन का विवाह स्व. "व्यंकटरमण सिंह"[७] जी के साथ हुआ था जो "महाराज व्यंकटरमण जू देव"[८] द्वारा सम्मानित थे ।

अपने पिता तथा पितामह की केवल यादें नहीं कुछ महत्वपूर्ण वस्तुएँ भी "सुमन"जी के पास आज भी मौजूद हैं । "सुमन" जी का बचपन सामंती ठाट बाट से और लाड प्यार में गुजरा । उनके बचपन में उनके मन पर शूरता और दृढ़ता के संस्कार हुये हैं ।

शिक्षा

डॉ. शिवमंगल सिंह "सुमन" की शिक्षा प्रारंभिक कालमें रीवाँ की विविध पाठशालाओं में हुई । "सन १९३२ ई. में. आप मैट्रिक हुए ।"[९] मैट्रिक, इन्टर और बी.ए. का अध्ययन काल ग्वालियर के वातावरण में बीता । आप स. "१९३७ ई. में बी.ए."[१०] उत्तीर्ण हो गये और स. १९४० ई. में एम्.ए."[११] [हिन्दी] प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान पाया । "सुमन" जी को "गीति काव्य का उद्गम, विकास और हिन्दी साहित्य में उसकी परम्परा" इस शोध,प्रबन्ध पर "स. १९५० ई. में डी. लिट"[१२] उपाधि प्राप्त हो गयी । गीति काव्य का

---

५. आ.प्र. दीक्षित, "आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि शिवमंगल सिंह "सुमन", पृष्ठ ६
६. वहीं, पृष्ठ ६
७. वहीं, पृष्ठ ७
८. वहीं, पृष्ठ ७
९. वहीं, परिशिष्ट पृष्ठ १५७
१०. वहीं, पृ. १५७
११. वहीं, पृ. १५७
१२. वहीं, पृ. १५७

उद्भव विकास और हिन्दी साहित्य में उसकी परम्परा" कवि के डी.लिट्. का विषय उस अध्ययन का परिणाम हुआ जिसके परिवेश में ऋग्वेद के "उषा गायन", कालिदास के "मेघदूत" जयदेव के "गीत गोविन्द"पंडित राज की "गंगालहरी" और स्तोत्रों से लेकर हिन्दी के गीतिकाव्य तक समा गए । चिन्तन घना था, परिवेश व्यापक था, साधना निर्विकल्प थी ।" [१३]

शैक्षणिक प्रवास में कवि "सुमन" जी के "मार्तण्ड मिडिल स्कूल रीवाँ"[१४] "दरबार हाईस्कूल रीवाँ" [१५]"विक्टोरिया कालिजियट हाईस्कूल "[१६] "विक्टोरिया कालेज ग्वालियर"[१७] आदि शिक्षण संस्था ओं ने "सुमन" जी की साथ निभाई ।

कवि शिवमंगल सिंह "सुमन" जी ने अपनी शिक्षा प्रारंभिक काल से लेकर उच्चतम, उपाधि तक बड़े चाव से और लगन से की और अपना कर्तृत्व बढ़ाया ।

<u>विकास</u>

मनुष्य का जीवन हरदम प्रगति के पथपर अग्रेसर होता रहता है । कवि "सुमन" भी मनुष्य समाज के एक प्रतिनिधि हैं तो फिर वे इस बात में विकल्प कैसे बनेंगे । उनका जीवन पथ भी प्रगति की उच्चतम चोटी हासील करने में कामयाब रहा है ।

---

१३. म. उपाध्याय, "कविश्री शिवमंगल सिंह "सुमन" , पृष्ठ १२
१४. आ.प्र.दीक्षित, "शिवमंगल सिंह "सुमन", परिशिष्ट पृष्ठ १५७
१५. वहीं, परिशिष्ठ पृ. १५७
१६. वहीं, परिशिष्ठ पृ. १५७
१७. वहीं, परिशिष्ठ पृ. १५७

बी.ए. होते ही "सुमन" जी "अनन्तर हायरस्कूल" [१८] में अध्यापक हुए । और एम्.ए. होने के बाद स. १९४२ ई. में "विक्टोरिया कालेज ग्वालियर" [१९] में हिन्दी प्राध्यापक के पद पर नियुक्त हुये ।

विद्यार्थी दशा में "सुमन" जिस कालेज से संस्कारित हुये उसी कालेज में उन्हें विद्यार्थियों को अनुशासन द्वारा संस्कार देनेका मौका मिला । "सन १९५२-१९५४ ई. तक माधव कालेज उज्जैन और स. १९५४ से १९५६ ई. तक वे होलकर कालेज इन्दौर में हिन्दी विभागाध्यक्ष का पद भार संभालते रहे ।" [२०] उनके जीवन में विकास का दौर यहाँ तक बढ़ता रहा कि उन्होंने स. १९६१ ई में माधव कालेज का प्राचार्य पद भी सुशोभित किया ।[२१] और आगे चलकर "सन १९६८ ई. में विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन" [२२] और स. १९७३ ई. में [२३] वहीं पर दुसरी बार उपकुलपति के पद पर नियुक्त हुये । डॅा. शिवमंगल सिंह "सुमन" का व्यक्तित्व बहुमुखी रहा ।

डॅा. शिवमंगल सिंह "सुमन" जी केवल शिक्षण सेवा में ही निरंतर नहीं रहे तो उन्होंने उनके सम्मान भी पायें । "सन १९५६ में पं. जवाहरलाल नेहरू के प्रसाद और राजदूत श्री भगवान सहाय के अनुरोध से प्रेस और सांस्कृतिक अताशी बनकर "सुमन" नेपाल गए ।" [२४] और इस कार्य में उन्होंने सन १९६१ ई. तक काम किया । अपना सेवा कार्य निभाते निभाते उन्हें परदेश गमन के भी मौके आये, अत: उन्होंने विदेश यात्रायें भी सफलता से की हैं । "सुमन" जी की विदेश यात्रायें

---

१८. वहीं, पृष्ठ १५७
१९. वहीं, पृष्ठ १५७
२०. वहीं, पृष्ठ १५७
२१. वहीं, पृष्ठ १५८
२२. वहीं, पृष्ठ १५८
२३. वहीं, पृष्ठ १५८
२४. भगवत शरण उपाध्याय, "कविश्री शिवमंगल सिंह "सुमन" ", पृष्ठ १३

निम्नलिखित हैं -

" १९६९ - के पूर्व दो बार मारीशस यात्रा । पहली यात्रा में अफ्रीका भी ।

१९६९ - इस्कस के निमंत्रण पर रूस यात्रा ।

१९७१ - भारतीय सांस्कृतिक प्रतिनिधि मण्डल के सदस्य रूप में मास्को, लेनिनग्राड, ताशकंद, समरकंद, कीव्ह, मंगोलिया, अल्माआता [कजाकिस्तान] ।

१९७३ - भारत की ओर से शान्ति परिषद् मास्को में ।

१९७४ - सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार के संदर्भ में १५ दिन की रूस यात्रा ।

१९७५ - ग्रीष्मावकाश में प्रतिनिधि मण्डल में रूस यात्रा ।

१९७६ - कामन वेल्थ कानफ्रेंस में सम्मिलित होनेपर स्काटलैण्ड, एडिनबर्ग, फ्रांस, रोम, इंग्लैंड, हालैण्ड की यात्रा ।" [२५]

आदि यात्रायें "सुमन" जी ने की हैं ।

<u>कृतियाँ</u> [प्रेरणा और प्रभाव]

अपने व्यस्त जीवन में कवि शिवमंगल सिंह "सुमन" साहित्य की सेवा अथक रूप में करते रहे हैं । काव्य-सृजन उनकी विद्यार्थी दशा से हुआ था । उन्हीं के शब्दों में "जब कालिज में नाम लिखाया तो नज्जारा बदल गया था । उम्र की रवानगी के कारण हरदम हरारत का अनुभव होता था हर शय सुहावना लगता था ।" [२६] इस अवस्था में ही उनका कंठ फूट पड़ा और अनायास ही कविता बन गई -

---

२५. आनंद प्रकाश दीक्षित, आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि शिवमंगल सिंह "सुमन" परिशिष्ठ पृष्ठ १५८-१५९

२६. वही, पृष्ठ ३१

"उपवन की वह हरियाली,
पावन समीर का चलना ।
विकसित कुसुमों की लाली,
डाली डाली का खिलना ।
उषा के इस नीरव में
सरिता का कल कल करना ।
बस हृदय हिला देता था
अधखिली कली का खिलना ।।"[२७]

कवि शिवमंगल सिंह "सुमन" के बचपन से लेकर अपने जीवन में हरदम साहित्य सृजन करते रहें । आज वे हिन्दी साहित्य जगत के जाने माने कवि बन गये हैं । उनके नामपर कुल मिलाकर आठ काव्य संग्रह मौजुद हैं । जो निम्नलिखित हैं -

"हिल्लोल" - १९४०, " जीवन के गान" - १९४१, "युग का मोल"-१९४२, "प्रलय सृजन"-१९४४, "विश्वास बढ़ता ही गया"-१९५५, "पर आँखें नहीं भरीं" - १९६६, "विंध्य हिमालय"-१९६६, "मिट्टी की बारात" १९७२" [२८]

इनमें से "विश्वास बढ़ता ही गया" काव्य संग्रह को मध्य प्रदेश सरकार व्दारा "देव पुरस्कार"[२९] से और "मिट्टी की बारात" यह काव्य संग्रह "साहित्य अकादमी व्दारा पुरस्कृत"[३०] हुआ था ।

कवि शिवमंगल सिंह "सुमन" जी केवल एक ही लिक पकड़कर नहीं चले बल्कि उन्होंने साहित्य की अन्य विधाओं को भी अपनाया । "गीतिकाव्य का

---

२७. वहीं, पृ. ३-४
२८. वहीं, पृ. १६०
२९. वहीं, पृ. १६०
३०. वहीं, पृ. १६०

उद्भव-विकास और हिन्दी साहित्य में उसकी परंपरा" [३१] इस शोध प्रबंध को १९५० में बनारस हिन्दू विश्व विद्यालय से डी. लिट्. उपाधि मीली । मगर यह अप्रकाशित है । इसके साथ साथ गद्य रचना "महादेवी की काव्य साधना" [३२] १९५१ और नाटक "प्रकृति पुरुष कालिदास" [३३]– १९७४ में लिखा जीनमें "महादेवी की काव्यसाधना" अप्रकाशित और "प्रकृति पुरुष कालिदास" यह नाटक प्रकाशित हैं । उपरोक्त सभी रचनाएँ शिवमंगल सिंह "सुमन" जी के नामपर प्रामाणिक रूप में विद्यमान हैं जिनमें कवि "सुमन"जी ने अपनी बहुमुखी प्रतिभा की पहचान दी हैं ।

प्रियतमा का प्रेम और शोषित मनुष्य ये दोनों बाते कवि के काव्य की प्रेरणाएँ रही हैं । "सुमन" के काव्य के दो प्रेरणा स्त्रोत हैं – प्रेयसी और मानव की शोषण जन्य व्यथा ।" [३४] कवि "सुमन" के दिल में हरदम एक व्यथा है कि वे अपने प्रेयसी का प्यार पाने में असफल रहे मगर कवि यहाँ विफल नहीं हुये । उन्होंने अपने मन की पीड़ा का उदात्तीकरण किया । "प्रेयसी को तो कवि कभी नहीं भूल पाता है, किन्तु विरह से सम्वेदनशील कवि मन की पीड़ा का उदात्तीकरण हो जाता है । अखिल मानवता की पीड़ा अब उसकी कविता स्त्रोत बन जाती है ।" [३५] और यही कविता सृष्टि का हर कोना मानवता के विजय का स्वप्न बनता है । और कवि कर्तव्य को श्रेष्ठ मानते हैं । "कर्तव्य को प्रेमसे अधिक महत्व देने वाला कवि विश्व व्यापक विप्लव-बुलाने चल पड़ा । उसकी साधना की दिशा बदल गई । प्यार में तड़पने-बेचैन होने वाले कवि के रोदन की

---

३१. सं. भगवतशरण उपाध्याय, "कविश्री शिवमंगल सिंह "सुमन", पृष्ठ २

३२. डा. प्र. दीक्षित, आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि शिवमंगल सिंह "सुमन" पृ. १६०

३३. वहीं, पृ. १६०

३४. सम्पत ठाकुर, "हिन्दी की मार्क्सवादी कविता, पृ. ४२८

३५. वहीं, पृष्ठ ४९

क्रूद्धता कर्तव्य पथपर आकर हुंकार करने लगी ।"[३६] यही हुंकार आगे चलकर दलित और शोषित समाज के उदय का मंत्र बनकर लेखनी चलाता हैं जो साम्राज्यवाद को नष्ट करना चाहती है । कवि शिवमंगल सिंह "सुमन"जी के व्यक्तित्व पर महात्मा गांधी, पं. नेहरु आदि महापुरुषों का प्रभाव हैं । भावनाशील बनकर अहिंसा का खंडन करनेवाले "सुमन" बापू के महानिर्वाण पर व्यथित होकर कहते हैं कि अब यह दुनिया मुँह दिखाने लायक तक नहीं रही ।" "१९४८ की ३० जनवरी को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी राष्ट्र-शत्रु साम्प्रदायिकता के गुमराह पागल की हत्या के शहीद हुए और कवि का अन्तरंग बहिरंग पीड़ा और क्रोध की संयुक्त चोट से डोल उठा । बापू नाम की बेजोड़ कविता तभी कवि की वाणी से फूटी ।" [३७]

कवि शिवमंगल सिंह "सुमन" महात्मा गांधी के भक्त तो है मगर राजनीति के सिलसिले में स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेते लेते उनका संबंध क क्रांतिकारियों से भी आता गया और वे उनसे भी प्रभावित होते गये । आम तौर पर क्रांतिकारक नास्तिक थे जो समाजवादी बने । इनकी प्रेरणा लेकर कवि काव्य के क्षेत्रमें योगदान देते रहे । फल स्वरुप उनकी कविता का स्वर प्रगतिवादी बना । "सन १९२१ ई. के बाद का दशक सन् ३२ के किसान सत्याग्रह में समाप्त हुआ और अगले दशक का अन्त समुचे भारतवर्षी उस आंन्दोलन में हुआ जिसने हिंसा का जवाब हिंसा से दिया । दीवाने रक्त बीज बनकर बार-बार रणांगन में उतरे, क्रांतिकारी जत्थे अवसर की तलाश में हथियार बन्द एकाकी घूमने लगे, हिंसा का प्रतिकार हिंसा द्वारा करने लगे । "सुमन" क्रांतिकारियों के दल में

---

३६. डॅा. अरविन्द पाण्डेय, "हिन्दी के प्रमुख कवि- रचना और शिल्प" पृष्ठ १८७

३७. सं. भगवतशरण उपाध्याय, " कविश्री शिवमंगल सिंह "सुमन", पृष्ठ १२

शामिल हुए और जैसे जैसे शरीर का परिमाण बढ़ता गया, वैसे वैसे दिमाग के सपने आकार लेने लगे वैसे ही वैसे कर्मठ पौरुष भी विकसित होता चला भारती मुखर हुई और छंद क्षुब्ध वातावरण की गरिमा लिये अपनी प्रौढ़ता में साकार हुए ।"[३८] "सुमन" गांधी और क्रांतिकारियों के प्रभाव में साथ साथ रहें । एक तरफ गांधी के आंदोलनों के साक्षी रहे तो दूसरी ओर क्रांतिकारियों का साथ भी निभाते रहें । "स्वयं "सुमन" जी की आरंभिक शिक्षा रीवाँ राज्य की छावनी में हुई और समय पाकर १९३०-३१ में नवीं कक्षा के छात्र होते हुए भी वे गांधी जी द्वारा चलाए गये आंदोलन और धरसाना मार्च तथा नमक-सत्याग्रह के साक्षी रहे । खादी तकली का आन्दोलन उनके प्राणों को स्पन्दित करने लगा, चेतना में प्रवाहित होने लगा ।"[३९] मगर उनके मन में क्रांतिकारियों का आकर्षण भी बढ़ता गया और वे हथियारों के साथी बने । "मैट्रिक करते करते १९३२ तक इनका सम्पर्क क्रांतिकारियों से भी स्थापित हो गया और चन्द्रशेखर आज़ाद के दल के सदस्यों को पिस्तौल-कारतूस पहुँचाने का कार्य करने लगे ।"[४०]

इस प्रकार कवि शिवमंगल सिंह "सुमन" दोनों तरफ समय का साथ निभाते चले और मार्क्सवाद से प्रभावित हो गये । सन् १९३५ में कवि शिवमंगल सिंह "सुमन"जी मार्क्सवाद के प्रभावमें प्रगतिशील लेखक संघ के सदस्य बने ।"[४१]

कवि "सुमन" जी के व्यक्तित्व पर आगे चलकर यही प्रभाव रहा । वे एक तरफ क्रांति की मशाल लेकर चलें तो दूसरी तरफ गांधी के भक्त के रूप में मानवता की पूजा भी करते रहें ।

---

३८. सं. भगवतशरण उपाध्याय, "कविश्री शिवमंगल सिंह "सुमन", पृ. १०
३९. आ.प्र. दीक्षित, आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि शिवमंगल सिंह "सुमन" पृष्ठ ७
४०. वहीं, पृष्ठ ७
४१. वहीं, परिशिष्ट पृष्ठ १५७

व्यक्तित्व

काव्य रचना के माध्यम से यदि कवि के अंतरंग का परिचय प्राप्त होता है तो कवि शिवमंगल सिंह "सुमन" भी इसके विकल्प नहीं हैं । "कवि का व्यक्तित्व निस्सन्देह उसके कृतित्व में प्रतिबिम्बित होता है पर अधिक तर केवल अंशतः । कुछ कवि निश्चय ऐसे होते हैं जिनके विचारों, मान्यताओं, स्थापनाओं और आदर्शों की उनके व्यक्तित्व के साथ उनके प्रति उसकी एकान्त निष्ठा होने के कारण उनके साथ उसकी एकाकारता भी हो जाती है । यह एकाकारता उसी मात्रा में मूर्त होती है जिस मात्रा में उसकी निष्ठा उनके प्रति घनी होती है । "सुमन" की मान्यताएँ उनके जीवन से ओतप्रोत हैं । जैसा उनका आकार है वैसी ही उनकी चेष्टा है, तद्वत ही उनका आचरण है ।"[४२] कवि शिवमंगल सिंह "सुमन" सचमुच अपने जीवन के भी सुमन ही हैं । कविता में उनका अंतरंग बोलता है औरजीवन में मानो कविता उतर आती है, अतः "सुमन" की कविता जीवन से अलग नहीं हैं ।

वक्ता

कवि शिवमंगल सिंह "सुमन" हिन्दी भाषा के श्रेष्ठ वक्ता भी हैं । "निश्छल अभिव्यक्ति और भावुक किन्तु अर्थवाहिनी शब्द-सम्पदा के सहारे उनके भाषण जितने कवित्वपूर्ण और सम्मोहक बन जाते हैं, उनकी कविता भी उसी तरह और गहरे में जाकर मर्म को छूने लगती है ।"[४३] जो लोग उनके भाषण सुनते हैं वे मंत्रमुग्ध हो जाते हैं । उनके भाषण में भावों का प्रवाह इसी प्रकार

---

४२. सं. भगवतशरण उपाध्याय, "कविश्री शिवमंगल सिंह "सुमन" , पृष्ठ १५

४३. आ. प्र. दीक्षित, आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि शिवमंगल सिंह "सुमन" पृष्ठ २४

उमड़ आता है लगता है कि काव्य सरिता श्रावण का रूप धारण कर बहने लगी है, फूट पड़ी हैं । "भावोद्गारों को साक्षात करा देने में उनकी वाणी जितनी समर्थ है वैसी बहुत कम की हुआ करती है ।"[४४] भावना ओं का उत्स्फूर्त आवेग उनके ज्ञान के साथ साथ एक धार होकर प्रवाहित होता है, अनुभूति का निस्सीम प्रवाह उर्वर मेधा की भूमिपर अबाध प्रवाहित होने लगता है । भावना ओं का साक्षात्कार कराने में उनकी वाणी समर्थ है । आनंदोल्लास हो या करुणा, उत्साह हो या स्थिरता सभी स्थानोंपर उनके शब्दों का प्रसार और विचारों का संचार इस तरह होता है कि उनकी अन्तरानुभूति मूर्त रूप धारण कर लेती है, अनवरुद्ध हार्दिकता श्रोता को मोह में जकड़ लेती है और "सुमन"जी का कवि उनके व्यक्तित्व का ही गोचर प्रत्यक्ष कराता है ।

कवि "सुमन"को व्यक्ति के रूपमें हमने देखना चाहा तो उनके व्यक्तित्व में अनेक पहेलु हैं । "व्यक्ति-रूप में "सुमन" में बच्चों जैसी निश्चलता है सहृदों जैसी सहज अन्तरंग आत्मीयता है, और है अपने से छोटों के प्रति स्नेहानुरागमयी मुक्तता जिसके पीछे यह कभी लक्षित ही नहीं हो पाता कि कहीं कोई व्यस्तता या व्यग्रता भी है, जीवन के कठोर क्षणों का ताप भी है । उपकुलपति के दायित्वपूर्ण और व्यस्त जीवन के क्षणों के बीच भी इनका कवि-स्वभाव सारे वातावरण को मुक्त और मधुर बनाए रखता है ।"[४५]

कवि शिवमंगल सिंह "सुमन" जी अपने घर में फूल और पौधों के बीच में मिले जुले रहते हैं । उन्होंने बड़े प्यार से नन्हें बच्चों की तरह पौधों को सींचा है और अपनी बाग को बहराया है । "फूलों-पौधों का ज्ञान उन्हें वनस्पतिशास्त्र के अध्ययन से नहीं मिला, बिरवों के प्रति अपनी सहज प्रीति के सहारे प्राप्त हुआ

---

४४. वहीं, पृष्ठ २४

४५. वहीं, पृष्ठ २४

है । प्रकृत सौन्दर्य से बिंधा-बँधा उनका मन इसीलिए कविता में नितान्त नयी छवियाँ उतार लाता है जिनमे नेत्ररंजकता भी है, स्पर्श-सुख भी, मादक गन्ध भी है और आल्हाद जनक रस भी ।"[४६]

"सुमन"जी के स्वभाव में मुक्त हास्य युक्त व्यवहार है वैसे ही चपलता भी । उनका मन मयुर हरक्षण कविता के उपवन में नाचने लगता है । मित्रों को कविता सुनाते सुनाते वे इतने मंत्रमुग्ध हो जाते हैं कि उन क्षणों में वे कर्म के केवल कवि और स्वभाव के "सुमन" ही रह जाते हैं ।

कवि "सुमन" बड़े सहृदयी कवि हैं । "कविता ने उन्हें सहृदयता प्रदान की है, अथवा सहृदयता ने उन्हें कविता नहीं कहा जा सकता ।"[४७]

समय की कमी "सुमन" के जीवन में कभी बाधा न ला सकी ।
" श्रीमद्भगवद्गीता एवं रामचरितमानस का नियमित अध्ययन, मनन-चिन्तन अनेक कठिनाइयों और समयाभाव के बीच भी चलता है । मुल्यवान और नये देशी-विदेशी साहित्य से परिचिति के लिए वे समयाभाव की बाधा को कभी स्वीकार ही नहीं करते । व्यस्तता के बीच भी उनके नियमित अध्ययन क्रम में कोई व्याघात नहीं पहुँचता ।"[४८]

कवि शिवमंगल सिंह "सुमन" का स्वभाव व्यक्तित्व और कृतित्व उनकी कीर्ति मे सहायक सिद्ध होता है । कवि "सुमन" कर्म के कवि और स्वभाव के "सुमन" ही रह जाते हैं । उनकी कविता उनके मानसिक भावना ओं का उत्स्फूर्त प्रवाह मात्र हैं ।

---

४६. वहीं, पृष्ठ २४-२५

४७. वहीं, पृष्ठ - २५

४८. वहीं, पृष्ठ - २५-२६